om-20a_Page 1 and 2 1/20/2014 7:58 PM Page 6

पिताश्री के साथ के अविस्मरणीय पल

पिताश्री हर तरह से एक आदर्श व्यक्ति थे

राजयोगी रमेश शाह जी अपने अनुभव इस प्रकार सुनाते हैं कि पिताश्री से मेरी पहली मुलाकात, जब वे मुंबई में आये हुए थे तब हुई। आज भी वह दृश्य मुझे याद आता है। उस समय तो मैं इस ईश्वरीय ज्ञान से परिचित नहीं था और मुझे यह भी पता नहीं था कि यह आत्मा और शरीर दोनों भाग्यशाली हैं और कि पिताश्री का शरीर परमपिता परमात्मा के अवतरण के लिए इस कलियुगी सृष्टि में साकार रथ है। फिर जब मैंने पिताश्री को पहली बार देखा तो यद्यपि मुझे उनकी महानता का परिचय नहीं था तथापि अस्पताल के एक कमरे में लेटे हुए उनको देखकर मुझे ऐसा लगा जैसे कि मै अजन्ता और एलोरा की गुफ़ा में शिला पर लेटे हुए महात्मा बुद्ध को देख रहा हूँ। एक धर्म-संस्थापक का ऐसा प्रतिभाशाली व्यक्तित्व तो होता ही है कि उससे मिलने वाले सामान्य नर पर उसका प्रभाव पड़ता है, उतना सम्माननीय व्यक्तित्व पिताश्री का था। उनका स्थान वास्तव में एक धर्म-संस्थापक से भी बड़ा है - यह बात तो मुझे बाद में मालूम हुई परन्तु यह संकल्प तो मेरी बुद्धि में तब से ही चल रहा था कि यह अवश्य ही कोई बहुत महान् आत्मा हैं। पहले नम्बर का पद पाने के लिए पहले नम्बर का विद्यार्थी बनना पड़ता है। अब हम सभी यह जानते हैं कि परमपिता परमात्मा हम सभी आत्माओं के सच्चे शिक्षक हैं, वे पिताश्री के तन द्वारा ज्ञान मुरली सुनाते थे। परन्तु जब हम साक्षी होकर विचार करते हैं तो ख़्याल आता है कि कई बार ऐसा भी होता होगा कि मुरली चलाते-चलाते परमपिता परमात्मा अपने कर्तव्यों को पूर्ण करने के लिए उसी सौभाग्यशाली रथ से थोड़े समय के लिए छुट्टी लेते होंगे। परन्तु यह आदर्श विद्यार्थी इतनी आसान रीति से अपने शिक्षक का स्थान भरकर मुरली का कार्य चालू रखते थे कि यह अन्तर बड़ी मुश्किल से बहुत ही कम ब्रह्मावत्सों को मालूम पड़ता था। अर्थात् ब्रह्मा बाबा आदर्श विद्यार्थी, इतनी अच्छी रीति से अपने शिक्षक परमात्मा का ज्ञान-दान देने का कर्तव्य करते थे कि दोनों की वाणी में बहुत ही सूक्ष्म भेद रहता था। उनकी वाणी में इतनी शक्ति, भाषा में दिव्यता, शब्दों में ललकार, शैली में सौजन्य था कि वो वाणी अन्धे को रोशनी, लूले को सहायक, गूँगे को संकेत, उलझे हुओं को सुलझाने वाली तथा अशक्त को शक्तिप्रदायक थी।

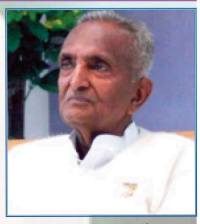

एक बार मुंबई में हम बाबा के साथ घूमने गये थे। तब मैंने एक छोटा-सा प्रस्ताव बाबा के सामने रखा - '' बाबा, जब आप ज्ञान-मुरली चलाते हैं तब मुरली की प्वाइंट्स कॉपी में नोट करने का मन होता है। साथ-साथ यह भी मन होता है कि उस समय आपके मुख-कमल की तरफ़ देखते हुए ज्ञानामृत का पान करते रहें। आप अपनी मुरली के लिए तैयारी ज़रूर करते होंगे। वो तैयार नोट्स हमें ज़रूर पहले से दे दीजिये ताकि बाद में उनकी नकल करना आसान हो जाये और उस समय हम केवल मुरली सुनें।'' पिताश्री मुरली चलाने से पहले नोट्स (भाषण की रूप-रेखा) बनाते होंगे - ऐसी कल्पना इसलिए हुई क्योंकि सब बड़े-बड़े विद्वान, पंडित, आचार्य, शास्त्री ऐसे भाषण तैयार करते हैं। मैंने सोचा कि जैसे एक वकील या बैरिस्टर अपने ब्रीफ (सार) तैयार करता है, वैसे ही बाबा भी करते होंगे। मैंने जब ऐसा निवेदन किया तो उन्होंने पूछा कि कौन-से नोट्स? जब मैंने अपना संकल्प बाबा के सामने स्पष्ट रूप से रखा तो वे बोले - ''मैं तो बिल्कुल तैयारी नहीं करता।'' पिताश्री न कोई किताब पढ़कर सुनाते, न किसी किताब का ब्योरा अथवा हवाला देते। बाबा थोड़े ही समय अख़बार पढ़ते थे। परन्तु मुरली के लिए किसी भी प्रकार की पहले से तैयारी नहीं करते थे बल्कि जो कहना होता था वह तत्काल ही कहते थे। उनकी स्वत: स्फुरित वाणी, उनकी बुद्धि के चमत्कार और विचारों की गहराई का प्रतीक है।

ब्र.कु.रमेश शाह अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

पिताश्री स्नेह और शक्ति के अद्भुत मिश्रण थे

चण्डीगढ़ से राजयोगी अमीर चन्द जी अपना अनुभव लिखते हैं कि बाबा के कमरे में प्रवेश करते ही हमने देखा कि बाबा दो-तीन बहन-भाइयों से मुलाकात कर रहे थे। स्नेह का सागर उमड़ रहा था। बहन-भाइयों के नयनों से तो स्नेह की धारा बह रही थी, बाबा के नयन भी गीले दिखाई दिये। हम उनके पीछे बैठ गये। उनसे मिलने के बाद जब बाबा की दृष्टि हम बच्चों पर पड़ी तो मुझे लगा कि मेरे शरीर में एक बहुत शक्तिशाली करेंट का प्रवाह बहने लगा है। शक्तिशाली अनुभव करने के बाद बाबा के नयनों से असीम स्नेह का आभास होने लगा। कानों में जैसे कोई बहुत धीरे से, मधुरता से कह रहा हो -मीठे बच्चे, आराम से पहुँच गये? आओ बच्चे! आओ बच्चे!! ऐसे लगा जैसे कि अनेक जन्मों की प्रभु-मिलन की प्यास तृप्त हो रही हो। पल बीतते जा रहे थे परन्तु मेरे लिए स्वयं को रोकना कठिन होता जा रहा था। मुझे पता ही नहीं चला कि मैं अपने स्थान से कब उठा और बाबा की गोद में समा गया। स्नेह और शक्ति का अद्भुत मिश्रण था। बाबा का शरीर अति कोमल लेकिन उसके चारों ओर लाईट ही लाईट दिखाई पड़ रही थी। देह का भान समाप्त हो गया था। कुछ समय के बाद बाबा ने बहुत ही दुलार से मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए मुझे सचेत किया। नयन गीले, शरीर हल्का, आत्मा आत्म-विश्वास रूपी शक्ति से ओत-प्रोत थी।

ब्र.कु.अमीर चंद ज़ोनल इंचार्ज (पंजाब ज़ोन), ब्रह्माकुमारीज़

मेरी नज़रें 'कोहिनूर हीरे' को ढूँढ़ रही थीं

मधुबन की ब्र.कु. मोहिनी बहन जी अपने अनुभव में कहती हैं कि आखिर मेरा स्वप्न साकार हुआ। आबू पर्वत की गोद में बसा हुआ शान्त, मीठा, तपोवन, 'मधुबन स्वर्गाश्रम' मेरे सामने था। मैंने अन्दर कदम रखा तो मुझे ऐसा लगा कि मैं यहाँ की हर चीज़ और हर व्यक्ति से पहले से ही परिचित हूँ। शुभ्र वस्त्रधारी बहनों एवं भाइयों के तपस्वी चेहरों ने मधुर मुस्कान से मेरा स्वागत किया। परन्तु मेरी नज़रें तो इस मधुबन रूपी सुन्दर डिब्बी के अन्दर रहने वाले उस 'कोहिनूर हीरे' को ढूँढ़ रही थीं जिससे मिलने को मैं व्याकुल थी। वह घड़ी भी आ पहुँची जब मुझे ब्रह्मा बाबा से मिलाने के लिए उनके कक्ष में ले जाया गया। मैंने सामने बाबा को देखा और अपलक देखती ही रह गयी। श्वेत वस्त्रधारी, लम्बा-ऊँचा, उन्नत ललाट, असाधारण एवं आकर्षणमय व्यक्तित्व - जिनके चेहरे से ज्योति की आभा फूट रही थी, आँखों से वात्सल्य, प्रेम, शक्ति, दया सब कुछ एक साथ ही झलक रहा था। जिनके होठों पर एक मधुर मुस्कान थी - मेरे सामने था। उस क्षण मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे कि उन्होंने मेरी समस्त शक्तियों को अपने वश में कर लिया हो और मेरे मन-बुद्धि बिल्कुल शान्त होकर रह गये हों। बाबा के चरित्र रमणीक भी थे और शिक्षाप्रद भी। बाबा का हरेक कर्म हम बच्चों के लिए आदर्श था। आज भी मुझे बहुत-सी समस्याओं का हल बाबा के चरित्रों के स्मरण से ही प्राप्त हो जाता है कि ऐसी स्थिति में बाबा ने क्या किया था।

ब्र.कु.मोहिनी अध्यक्ष, ग्राम विकास प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़

पिताश्री जी को देखते ही लगा कई बार देखा है

ब्र.कु. प्रेम बहन जी अपना अनुभव सुनाती हैं कि 14 वर्ष की आयु में मैं हिन्दू नव संवत पर पहली नवरात्रि के दिन लौकिक माँ के साथ शीतला देवी के दर्शन करने गयी थी, जहाँ नानी जी से भेंट हुई और उन्होंने बताया कि माउण्ट आबू से देवियाँ आई हुई हैं। वे आपके घर के पास ठहरी हुई हैं। उनके भी दर्शन करने जाओ। अत: माताजी और मैं नानी के साथ सेवाकेन्द्र पर गये। उस समय क्लास चल रहा था। मुरली तो कुछ समझ में नहीं आई परन्तु वहाँ के शान्त और पवित्र वातावरण ने मन को आकर्षित अवश्य कर लिया। मेरी माताजी को वहाँ बहुत साक्षात्कार होने लगे। इसलिए वह बहुत जल्दी निश्चय-बुद्धि बन नित्य क्लास में जाने लगीं। एक दिन दादी निर्मलशान्ता जी अमृतसर आईं तो लौकिक माँ ने बताया कि ब्रह्मा बाबा की बेटी आई हैं, आप उनसे ज़रूर मिलो। उत्सुकतावश मैं सेन्टर पर गयी। दादी निर्मलशान्ता जी यथा नाम तथा गुणमूर्त देख मुझे बहुत ही खुशी हुई। ज्ञान चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि जीवन का सच्चा सुख ईश्वर से ही प्राप्त हो सकता है। प्रथम बार प्यारे साकार बाबा से दिल्ली रजौरी गार्डन मे मिलने का सौभाग्य मिला। मैंने जैसे ही बाबा को देखा, बहुत देर तक अपलक निहारती रही और मुझे इतनी स्पष्ट स्मृति आने लगी कि जैसे इसी जीवन में मैंने बाबा को कई बार देखा हुआ है, जबकि बाबा से मेरी यह प्रथम भेंट थी।

ब्र.कु.प्रेम सबज़ोन इंचार्ज, हरिद्वार, ब्रह्माकुमारीज़

छोटा उदेपुर। आदिवासी जागृति अभियान का हरी झण्डी दिखाकर शुभारंभ करते हुए तालुका पंचायत प्रमुख वानु बेन वसावा। साथ हैं ब्र.कु.मोनिका, अभियान यात्री तथा अन्य।

फरीदाबाद। संजय भाटिया, पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेटर, खेल समीक्षक, आलोचक को स्नेह मिलन कार्यक्रम के पश्चात् मीडिया की सेवाओं से अवगत कराते हुए ब्र.कु.कौशल्या।

अरवपुर। गीतों द्वारा राजयोग शिविर के उद्घाटन समारोह में ब्र.कु.अविनाश को सम्मानित करते हुए पुलिस अधीक्षक शिव सागर सिंह तथा साथ हैं ब्र.कु.नीरू।

इन्दौर-म.प्र.। अलविदा तनाव शिविर का उद्घाटन करते हुए खजराना गणेश मंदिर के पुजारी अशोक भट्ट, धर्मेन्द्र भट्ट, ब्र.कु.नगीना, ब्र.कु.पूनम तथा अन्य।

नेपियर टाऊन। राजकीय मेडिकल कॉलेज, नर्स हॉस्टल में सम्बोधित करते हुए डॉ. अवधेश शर्मा। साथ हैं डॉ. श्यामजी रावत, डॉ पुष्पा पाण्डे तथा ब्र.कु.भुमि।